Indian Culture and Social Issues

Ms. Rekha Kumari

Assistant Professor

Department of Sanskrit

Shivaji College

भारतीय संस्कृति

- भारतीय संस्कृति से तात्पर्य है भारत की संस्कृति।
- भारतीय संस्कृति को विश्व संस्कृतियों में सर्वोच्च पद प्राप्त है। भारतीय संस्कृति की निम्न विशेषताएं हैं।
- **सर्वाधिक प्राचीन।**
- **अक्षुण्ण प्रवाह।**
- **समन्वयभाव तथा विचार सहिष्णुता।**
- **ग्रहणशीलता।**
- **अनुकूलता एवं परिवर्तनशीलता।**
- **आध्यात्मिका।**

- सर्वांगीणता।
- संचरणशीलता।
- धर्मपरायणता।
- आशावाद।
- आस्था एवं कर्मवाद।
- पुनर्जन्मवाद।
- अवतारवाद।
- विश्वकल्याण एवं विश्वबन्धुत्व की भावना।
- त्यागभावना।
- साम्यवाद।

आशावाद

- भारतीय संस्कृति की अन्य विशेषता है आशावादी होना।
- जीवन में अन्के विपत्तियां एवं बाधाएं आती हैं, किन्तु उन सभी को पार करके अपना लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है, अपना अभीष्ट सिद्ध हो सकता है केवल मात्र आशा के आधार पर।
- 'आशा हि परमं ज्योतिः' अर्थात् आशा ही परम ज्योति है।
- आशावाद ही भारतीय संस्कृति का वह वैशिष्टय था जिसने वैदिक ऋषि को उत्साहपूर्वक शतायु हो सकने तक की प्रेरणा दी।
- मनुष्य के मन में आशा ही है जो उसे प्रत्येक परिस्थिति एकसमान सा रखती है।

आस्था एवं कर्मवाद

- भारतीय संस्कृति में कर्मवाद की प्रेरणा दी गयी है। इस कर्मावद का सहज परिणाम अटूट आस्था है।
- यदि मनुष्य में आस्था बनी रही, तो मन में उत्साह भी रहता है और कर्म की ओर प्रवृत्ति भी रहती है।
- मनुष्य को आस्था अपने कर्म के प्रति रखनी चाहिये। जिसके प्रति आस्था रहती है मनुष्य उसके प्रति पूर्ण निष्ठा पूर्वक होकर कर्मरत रहता है।
- इस प्रकार निरन्तर कर्म और आस्था का यह तत्त्व भारतीय संस्कृति की विशेषता है।

पुनर्जन्मवाद

- मृत्यु के उपरान्त व्यक्ति अपने कर्मों के अनुकूल पुनः विभिन्न योनियों में जन्म लेता है, पुनर्जन्म का यह सिद्धान्त भारतीय संस्कृति की एक और विशेषता है।
- मनुष्य को अपने शुभ या अशुभ कर्मों का फल अवश्य भोगना पड़ता है।
- जबतक कर्मफल समाप्त नही होते तबतक पुनःपुनः जन्म- मरण का चक्र चलता ही रहता है।
- मनुष्य के पूर्वजन्मों के अनुसार ही सुख-दुःख निश्चित होते हैं, यह प्रत्येक भारतीय के हृदय में निहित है।

अवतारवाद

- भारतीय विश्वास के अनुसार संसार में अत्याचार एवं अन्याय का नाश करने के लिये और धर्म की पुनः स्थापना के लिये समय समय पर महापुरुष जन्म लेते हैं और संस्कृति तथा धर्म की रक्षा करते हैं।
- भारतीय धर्मग्रन्थों और साहित्यकारों ने इन्हीं महापुरुषों को भगवान् का अवतार मान लिया।
- भगवान् विष्णु के अवतार की मान्यता से सभी भारतीय प्रभावित है हीं।
- अवतारवाद की यह परिकल्पना तर्क से नितान्त परे केवल श्रद्धा और भक्ति पर आधारित है।

विश्वकल्याण एवं विश्वबन्धुत्व की भावना

- भारतीय संस्कृति में व्यष्टि के स्थान पर समष्टि को महत्त्व दिया गया है।
- सभी सुखी हों, सभी स्वस्थ रहें- यही भारतीय संस्कृति का उद्घोष है- 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।'
- सभी जीवों के कल्याण की कामना के साथ साथ सभी में परस्पर सौहार्द एवं बन्धुत्व का प्रतिपादन भी भारतीय संस्कृति ने किया।
- भारतीय संस्कृति ने सदैव संकुचित विचारधारा और स्वार्थों से ऊपर उठकर विश्वकल्याण और सम्पूर्ण मानवता की सेवा पर बल दिया है।

त्यागभाव

- मनुष्य मात्र में स्वार्थ की प्रवृत्ति जितनी सहज है, संग्रह की लालसा भी उतनी ही स्वाभाविक है।
- परन्तु मनुष्य दूसरे के लिये अपनी आवश्यकता को न्योछावर कर सके, कभी एक दूसरे की वस्तु का लोभ न करे- यह पाठ भारतीय संस्कृति ने ही पढ़ाया।
- सम्पूर्ण संस्कृत वाङ्मय त्याग के विभिन्न उदाहरणों से भरा पड़ा है।
- शिवि, दधीचि, कर्ण आदि अपनी त्याग भावना के कारण ही अमर यशस्वी हुए।

साम्यवाद

- वेदों में यह घोषणा कर दी गई थी कि समस्त मानव समाज एक अखण्ड सत्ता से सत्तावान् है; एक अनन्त प्राणशक्ति के द्वारा संजीवित है, एक परम पुरुष की विराट देह है।
- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र इस विराट देह के विभिन्न अंग है।
- देह के अंग प्रत्यंगों में विविधता और भिन्नता जितनी स्वाभाविक है, उतनी ही सहज विविधता और भिन्नता इन चारों वर्णों में भी है।
- इसी कारण साम्यभाव/साम्यवाद मानना ही सर्वोन्नत विचार है।